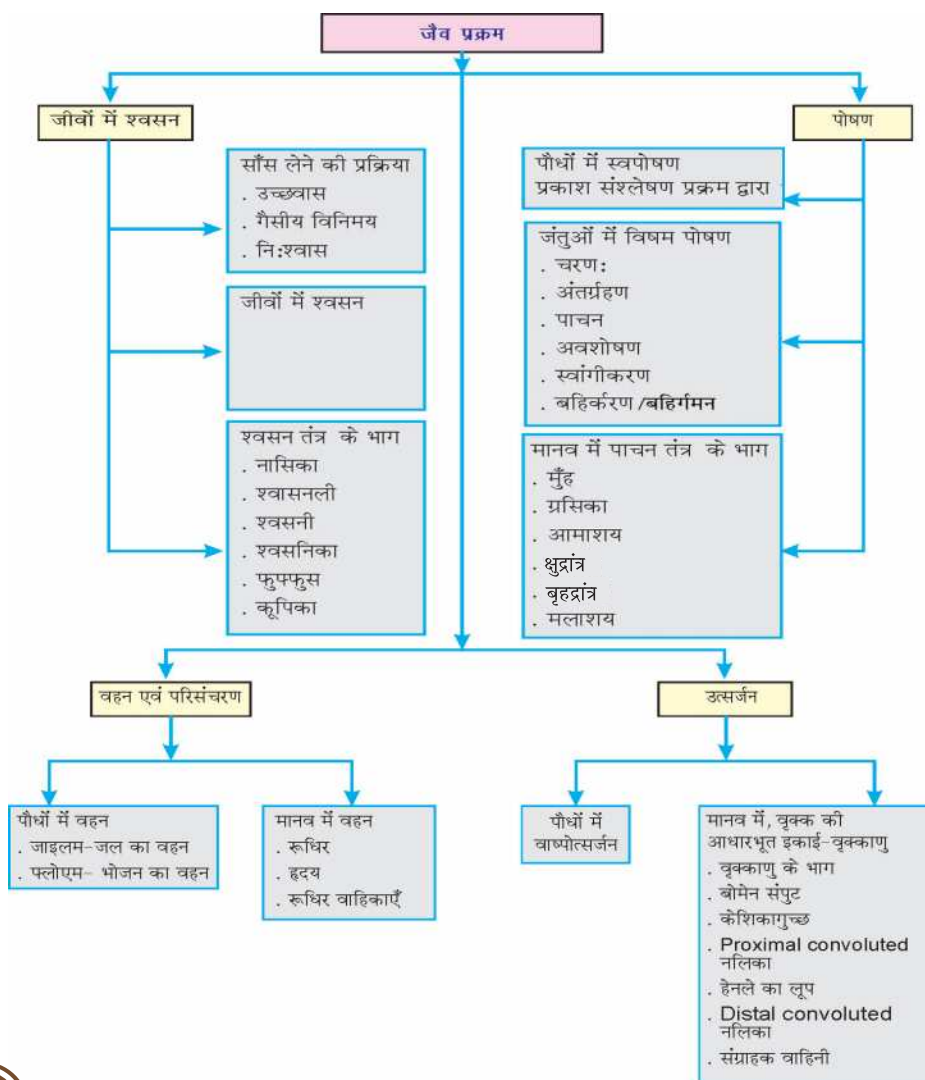


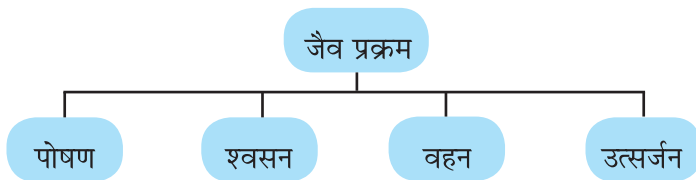
अध्याय - 5

जैव प्रक्रम



जैव प्रक्रम :

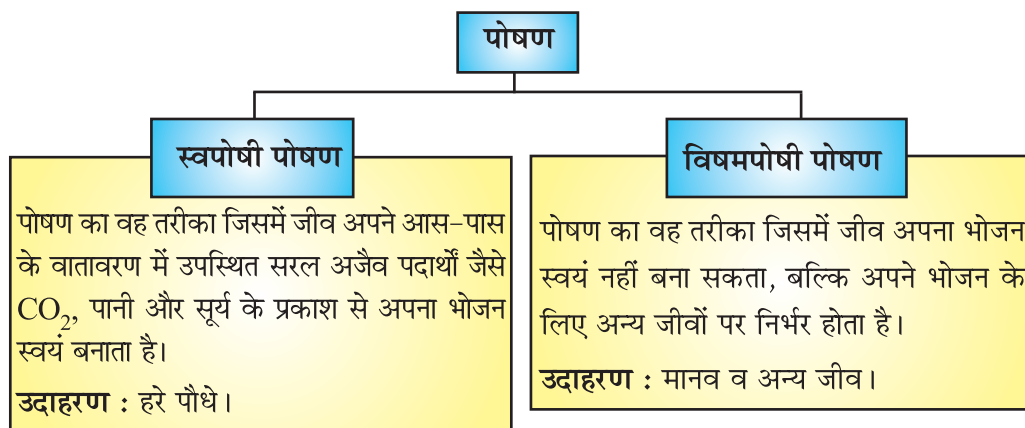
वे सभी प्रक्रम जो संयुक्त रूप से जीव के अनुरक्षण का कार्य करते हैं, जैव प्रक्रम कहलाते हैं।



पोषण :

भोजन ग्रहण करना, पचे भोजन का अवशोषण एवं शरीर द्वारा अनुरक्षण के लिए उसका उपयोग, पोषण कहलाता है।

पोषण के आधार पर जीवों को दो समूह में बाँटा जा सकता है।

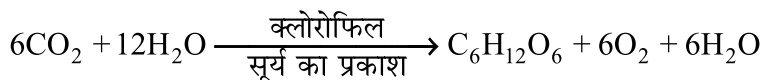


स्वपोषी पोषण :

स्वपोषी पोषण हरे पौधों में तथा कुछ जीवाणुओं जो प्रकाश संश्लेषण कर सकते हैं, में होता है।

प्रकाश संश्लेषण :

यह वह प्रक्रम है जिसमें स्वपोषी बाहर से लिए पदार्थों को ऊर्जा संचित रूप में परिवर्तित कर देता है। ये पदार्थ कार्बन डाइऑक्साइड तथा जल के रूप में लिए जाते हैं, जो सूर्य के प्रकाश तथा क्लोरोफिल की उपस्थिति में कार्बोहाइड्रेट में परिवर्तित कर दिए जाते हैं।



प्रकाश संश्लेषण के लिए आवश्यक कच्ची सामग्री :

- ★ सूर्य का प्रकाश
- ★ क्लोरोफिल
- ★ कार्बन डाइऑक्साइड - स्थलीय पौधे इसे वायुमण्डल से प्राप्त करते हैं।
- ★ जल - स्थलीय पौधे, जड़ों द्वारा मिट्टी से जल का अवशोषण करते हैं।

प्रकाश संश्लेषण के दौरान निम्नलिखित घटनाएं होती हैं :

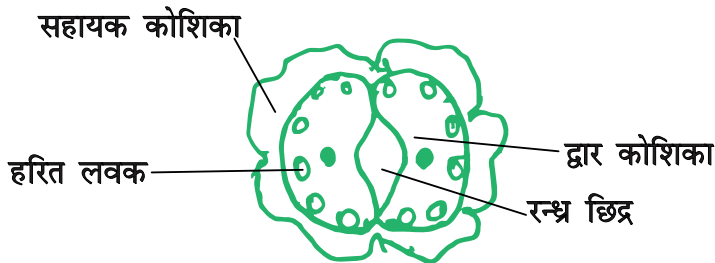
- ★ क्लोरोफिल द्वारा प्रकाश ऊर्जा को अवशोषित करना ।
- ★ प्रकाश ऊर्जा को रासायनिक ऊर्जा में रूपांतरित करना तथा जल अणुओं का हाइड्रोजन तथा ऑक्सीजन में अपघटन।
- ★ कार्बन डाइऑक्साइड का कार्बोहाइड्रेट में अपचयन।

रंध्र (Stomata)

पत्ती की सतह पर जो सूक्ष्म छिद्र होते हैं, उन्हें रंध्र (Stomata) कहते हैं।

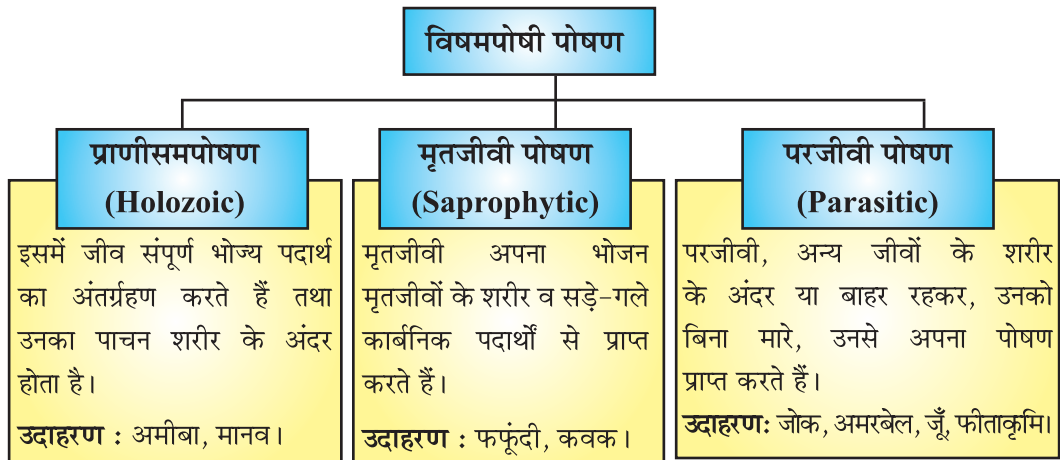
रंध्र के प्रमुख कार्य :

- ★ प्रकाश संश्लेषण के लिए गैसों का अधिकांश आदान-प्रदान इन्हीं छिद्रों के द्वारा होता है।
- ★ वाष्पोत्सर्जन प्रक्रिया में जल (जल वाष्प के रूप में) रंध्र द्वारा निकल जाता है।

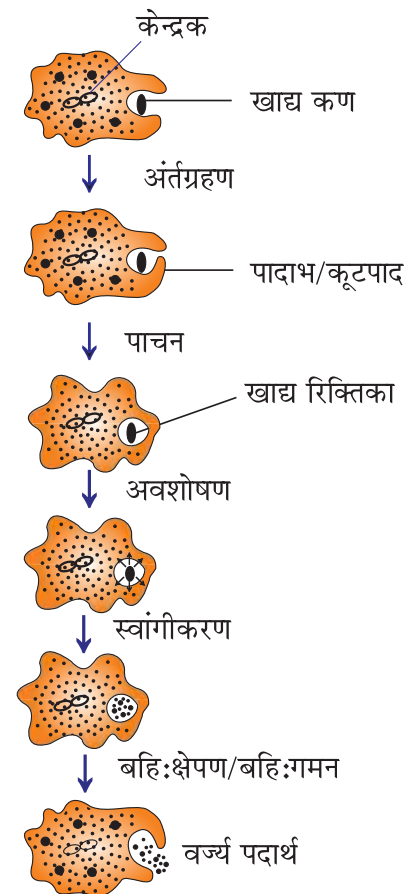


चित्र : रंध्र-पत्ती की सतह पर सूक्ष्म छिद्र श्वसन गैसों के विनिमय और वाष्पोत्सर्जन के लिए खुलते-बंद होते हैं।

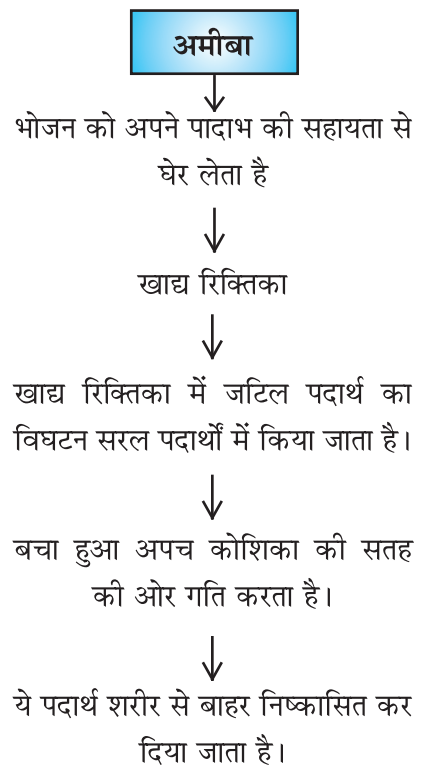
विषमपोषी पोषण (Heterotrophic Nutrition)



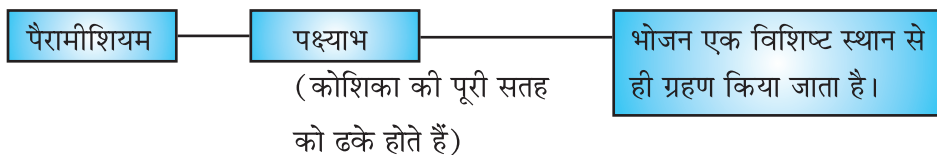
I. अमीबा में पोषण



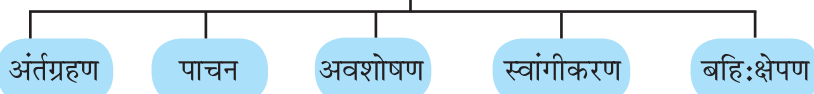
अमीबा में पोषण



II. पैरामीशियम में पोषण



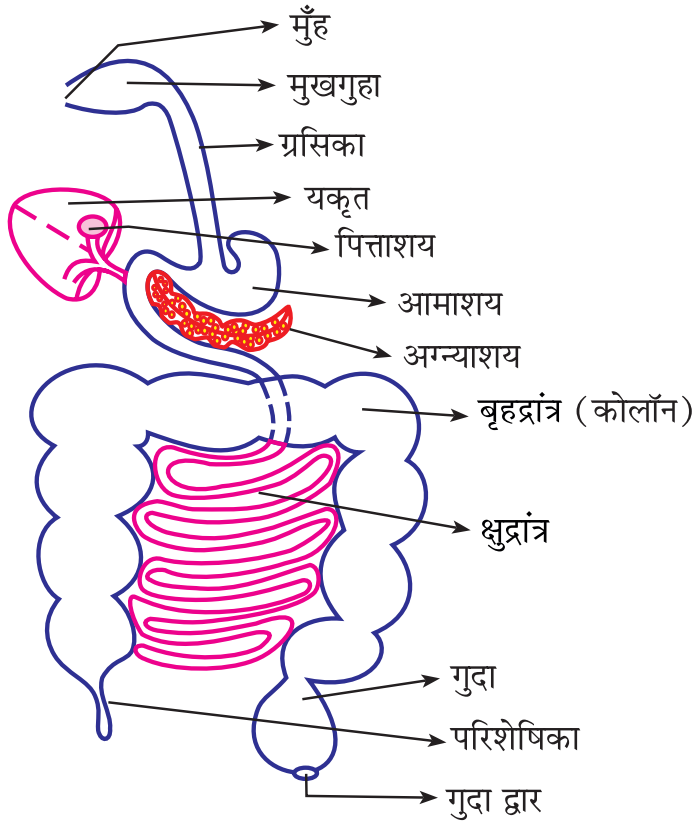
मनुष्य में पोषण



आहार नाल मूल रूप से मुंह से गुदा तक विस्तारित एक लंबी नली है।

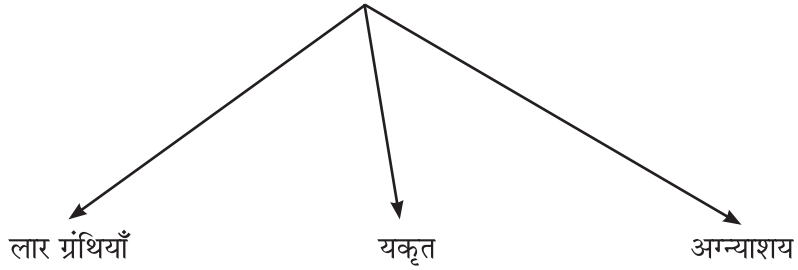
1.	मुंह → ↓ दाँत ↓ जिह्वा ↓ लार ग्रंथि ↓ शर्करा	→	भोजन का अंतः ग्रहण भोजन को चबाना भोजन को लार के साथ पूरी तरह मिलाना लार ग्रंथि से निकलने वाले रस को लार रस या लार कहते हैं। स्टार्च $\xrightarrow[\text{एमिलेस}]{\text{लार}}$ शर्करा
2.	भोजन ग्रसिका ↓	→	मुंह से आमाशय तक भोजन, ग्रसिका की क्रमाकुंचक गति (Peristaltic movement) द्वारा ले जाया जाता है। (ग्रसिका की मासपेशियों का संकुचन और शिथिलन)
3.	आमाशय	→	जठर ग्रंथियाँ ↓ पेप्सिन हाइड्रोक्लोरिक श्लेष्मा अम्ल पाचक एंजाइम (अम्लीय माध्यम (आमाशय के (प्रोटीन का तैयार करता है आंतरिक अस्तर पाचन करता है) जो कि पेप्सिन की अम्ल से

			की क्रिया में सहायक होता है।)
4. क्षुद्रांत्र	→		(i) आंत रस परिवर्तित करता है <pre> graph TD A[आंत रस] --> B[कार्बोहाइड्रेट] A --> C[वसा] A --> D[प्रोटीन] B --> E[ग्लूकोज] C --> F[वसा अम्ल + ग्लिसरॉल] D --> G[अमीनो अम्ल] </pre> (ii) यकृत तथा अग्न्याशय से स्रावण प्राप्त करती है। (a) यकृत → पित्तरस → पित्त लवण वसा $\xrightarrow{\text{पित्त लवण}}$ वसा (बड़ी गोलिकाओं) इमल्सीकरण (छोटी गोलिकाओं) (b) अग्न्याशय → अग्न्याशयिक रस <pre> graph TD A[अग्न्याशयिक रस] --> B[ऐमिलेस एंजाइम] A --> C[ट्रिप्सिन एंजाइम] A --> D[लाइपेज एंजाइम] E[प्रोटीन] --> ट्रिप्सिन F[पेप्टोन्स] G[वसा] --> लाइपेज H[वसा अम्ल + ग्लिसरॉल] I[स्टार्च] --> ऐमिलेस J[ग्लूकोज] </pre> (iii) दीर्घरोम → अवशोषण का सतही (iv) क्षेत्रफल बढ़ा देते हैं।
5. बृहद्वांत्र	→		जल का अवशोषण, वर्ज्य पदार्थ गुदा द्वारा शरीर से बाहर कर दिया जाता है।



मानव पाचन तंत्र

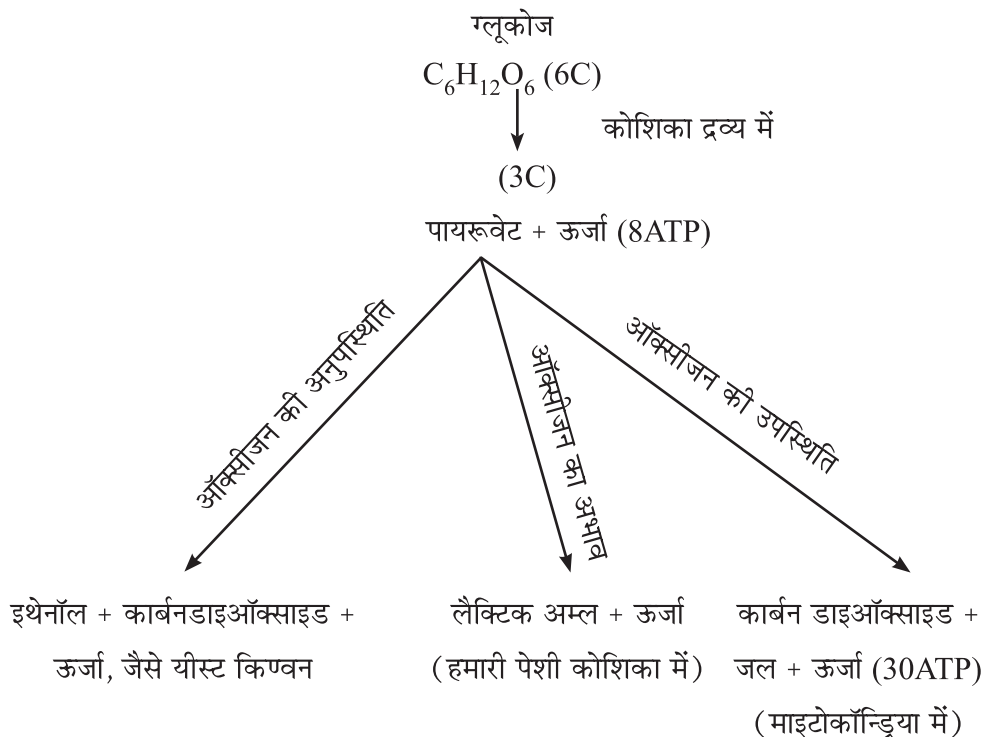
पाचन तंत्र = आहार नली + पाचक ग्रन्थियाँ



श्वसन

पोषण प्रक्रम के दौरान ग्रहण की गई खाद्य सामग्री का उपयोग कोशिकाओं में होता है जिससे विभिन्न जैव प्रक्रमों के लिए ऊर्जा प्राप्त होती है। ऊर्जा उत्पादन के लिए कोशिकाओं में भोजन के विखंडन को कोशिकीय श्वसन कहते हैं।

भिन्न पथों द्वारा ग्लूकोज का विखंडन



श्वसन

वायवीय श्वसन

- ★ ऑक्सीजन की उपस्थिति में होता है।
- ★ ग्लूकोज का पूर्ण उपचयन होता है, कार्बनडाइऑक्साइड, पानी और ऊर्जा मुक्त होती है।
- ★ यह कोशिका द्रव्य व माइटोकॉन्ड्रिया में होता है।
- ★ अधिक ऊर्जा उत्पन्न होती है। (38ATP)

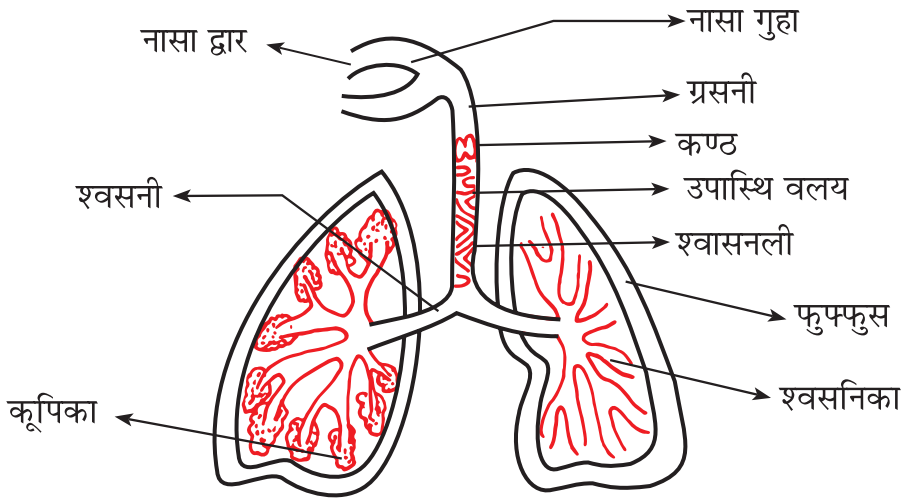
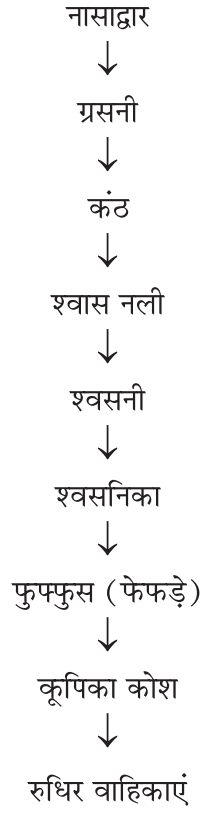
उदाहरण : मानव।

अवायवीय श्वसन

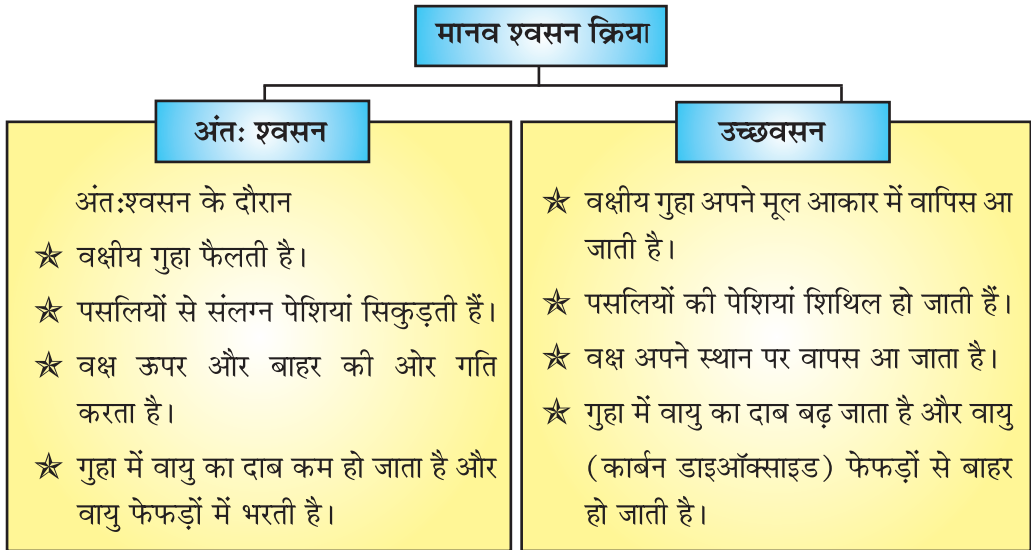
- ★ ऑक्सीजन की अनुपस्थिति में होता है।
- ★ ग्लूकोज का अपूर्ण उपचयन होता है, जिसमें एथेनॉल, लैक्टिक अम्ल, कार्बन डाइऑक्साइड और ऊर्जा मुक्त होती है।
- ★ यह केवल कोशिका द्रव्य में होता है।
- ★ कम ऊर्जा उत्पन्न होती है। (2ATP)

उदाहरण : यीस्ट।

मानव श्वसन तंत्र



मानव श्वसन तंत्र



★ **अंतः श्वसन** : सांस द्वारा वायुमंडल से गैसों को अंदर ले जाना है।

★ **उच्छ्वसन** : फेफड़ों से वायु या गैसों को बाहर निकालना।

★ **स्थलीय जीव** : श्वसन के लिए वायुमंडल से ऑक्सीजन का उपयोग करते हैं।

★ **जो जीव जल में रहते हैं** : वे जल में विलेय ऑक्सीजन का उपयोग करते हैं।

कूपिका, रक्त व उत्तकों के बीच गैसों का आदान-प्रदान

1. वायु (O_2 से समृद्ध) (कूपिका) $\rightarrow$ रक्त वाहिका $\rightarrow O_2$, RBC में हीमोग्लोबिन के साथ मिलकर HbO_2 बनाती है।



CO_2 का उत्पादन (उत्तक में) $\leftarrow$ ग्लूकोज का ऑक्सीकरण (उत्तक में) $\leftarrow$ धमनी द्वारा O_2 उत्तकों में पहुंचती है।

2. CO_2 (उत्तकों में) $\rightarrow CO_2$ रक्त वाहिका में $\rightarrow CO_2$ का रक्त में विसरण



CO_2 का मोचन (नासाद्वारा $\leftarrow CO_2$ का कूपिका कोश में विसरण $\leftarrow$ रक्त वाहिका द्वारा कूपिका में विसरण द्वारा बाहर)

संवहन

मनुष्य में भोजन, ऑक्सीजन व अन्य आवश्यक पदार्थों की निरंतर आपूर्ति करने वाला तंत्र, संवहन तंत्र कहलाता है।

मानव संवहन तंत्र के मुख्य अवयव इस प्रकार हैं

हृदय

रक्त नलिकाएँ अथवा
वाहिकाएँ (धमनी व शिरा)

वहन माध्यम (रक्त व लसीका)

रक्त

कणीय अवयव
(रुधिर कणिकाएँ)

द्रवीय अवयव
(प्लाज्मा) →

पीले रंग का तरल पदार्थ
जिसमें 90% जल होता है तथा
शेष अवयव जैविक : प्रोटीन
जैसे एलब्यूमिन, ग्लोब्यूलिन
अजैविक: खनिज तत्व

लाल रक्त
कणिकाएँ

श्वेत रक्त
कणिकाएँ

रक्त
प्लेटलैट्स

O₂, CO₂ का वहन,
हीमोग्लोबिन (Hb)
रक्त को लाल
रंग देता है।

शरीर को
रोग-मुक्त
करने में
सहायक

रक्त का
थक्का
बनाने में
सहायक

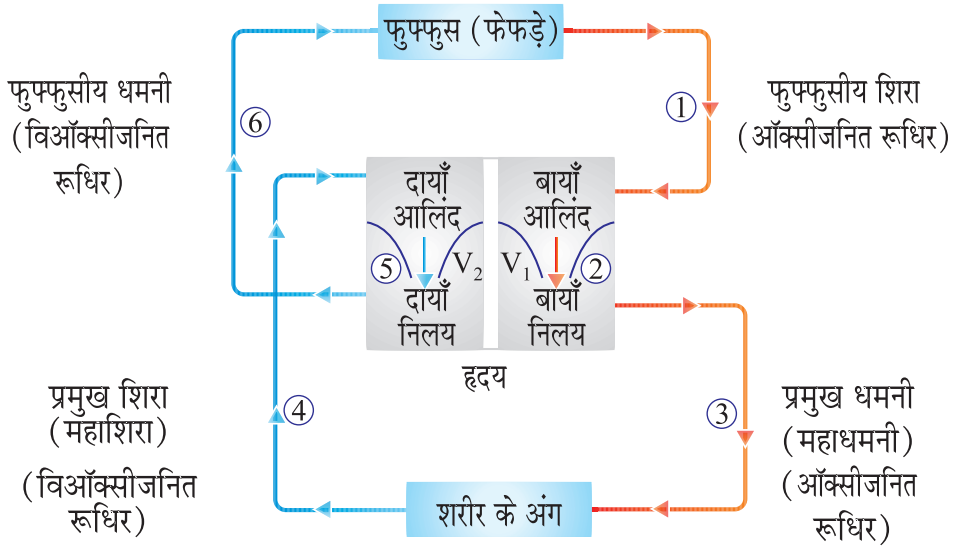
रक्त वाहिका

धमनी

- ★ ऑक्सीकृत रुधिर को हृदय से शरीर के विभिन्न अंगों तक ले जाती है। अपवाद फुफ्फुस-धमनी।
- ★ धमनी की भित्ति मोटी व अधिक लचीली होती है।
- ★ वाल्व नहीं होते।
- ★ ये सतही नहीं होती, उत्तकों के नीचे पाई जाती हैं। (Deep seated)

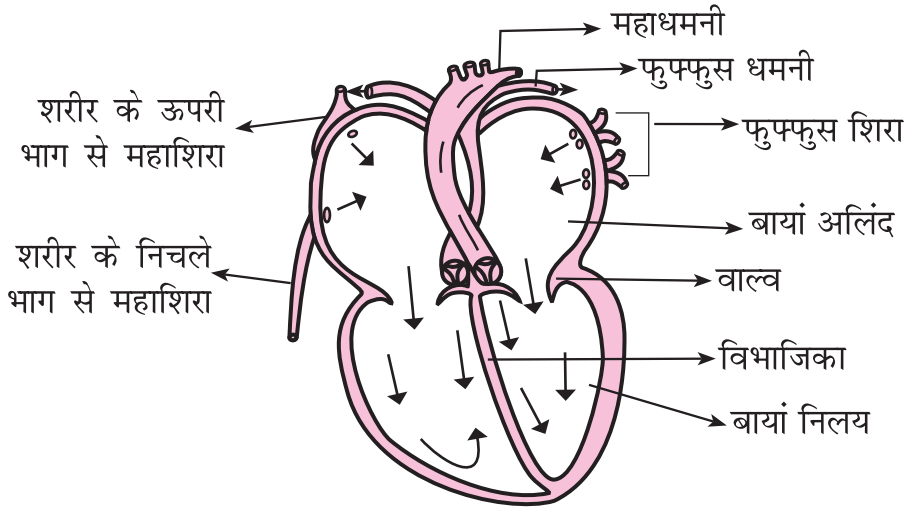
शिरा

- ★ शिराएँ विभिन्न अंगों से अनॉक्सीकृत रुधिर एकत्र करके वापस हृदय में लाती हैं। अपवाद फुफ्फुस-शिरा
- ★ शिरा की भित्ति कम मोटी व कम लचीली होती है।
- ★ वाल्व होते हैं।
- ★ ये सतही होती हैं। (Superficial)



चित्र : मानव शरीर में रूधिर परिसंचरण दर्शाने के लिए रेखाचित्र

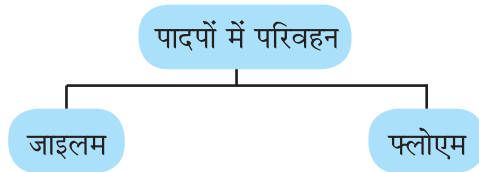
- ★ मानव हृदय एक पम्प की तरह होता है जो सारे शरीर में रूधिर का परिसंचरण करता है।
- ★ अलिंद की अपेक्षा निलय की पेशीय भित्ति मोटी होती है क्योंकि निलय को पूरे शरीर में अधिक रक्तचाप से रूधिर भेजना होता है।



चित्र : मानव हृदय की अनुप्रस्थ काट

हृदय में उपस्थित वाल्व रूधिर प्रवाह को उल्टी दिशा में रोकना सुनिश्चित करते हैं।

लसीका : एक तरल उत्तक है, जो रूधिर प्लाज्मा की तरह ही है; लेकिन इसमें अल्पमात्रा में प्रोटीन होते हैं। लसीका वहन में सहायता करता है।



जाइलम : पादप तंत्र का एक अवयव है, जो मृदा से प्राप्त जल और खनिज लवणों का वहन करता है जबकि फ्लोएम पत्तियों द्वारा प्रकाश संश्लेषित उत्पादों को पौधे के अन्य भागों तक वहन करता है।

जड़ व मृदा के मध्य आयन सांद्रण में अंतर के चलते जल मृदा से जड़ों में प्रवेश कर जाता है तथा इसी के साथ एक जल स्तंभ निर्माण हो जाता है, जो कि जल को लगातार ऊपर की ओर धकेलता है। यही दाब जल को ऊँचे वृक्ष के विभिन्न भागों तक पहुँचाता है।

यही जल पादप के वायवीय भागों द्वारा वाष्प के रूप में वातावरण में विलीन हो जाता है, यह प्रक्रम वाष्पोत्सर्जन कहलाता है।

इस प्रक्रम द्वारा पौधों को निम्न रूप से सहायता मिलती है।

- ★ जल के अवशोषण एवं जड़ से पत्तियों तक जल तथा विलेय खनिज लवणों के उपरिमुखी गति में सहायक।
- ★ पौधों में ताप नियमन में भी सहायक है।

भोजन तथा दूसरे पदार्थों का स्थानांतरण (पौधों में)

- ★ प्रकाश संश्लेषण के विलेय उत्पादों का वहन स्थानांतरण कहलाता है जो कि फ्लोएम ऊतक द्वारा होता है।
- ★ स्थानांतरण पत्तियों से पौधों के शेष भागों में उपरिमुखी तथा अधोमुखी दोनों दिशाओं में होता है।
- ★ फ्लोएम द्वारा स्थानांतरण ऊर्जा के प्रयोग से पूरा होता है। अतः सुक्रोज फ्लोएम ऊतक में ए.टी.पी. ऊर्जा से परासरण बल द्वारा स्थानांतरित होता है।

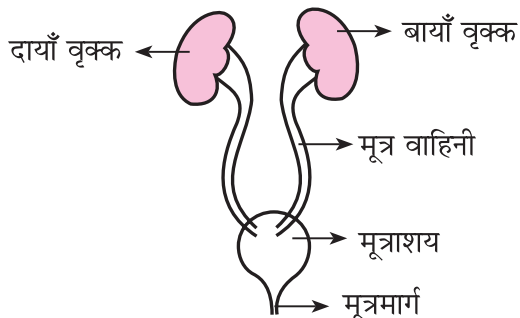
मानव में उत्सर्जन

वह जैव प्रक्रम जिसमें जीवों में उपापचयी क्रियाओं में जनित हानिकारक नाइट्रोजन युक्त पदार्थों का निष्कासन होता है, उत्सर्जन कहलाता है।

एक कोशिकीय जीव इन अपशिष्ट पदार्थों को शरीर की सतह से जल में विसरित कर देते हैं।

मानव उत्सर्जन तंत्र में उपस्थित अंग निम्न प्रकार के हैं—

- (1) एक जोड़ा वृक्क (Kidney)
- (2) एक जोड़ा मूत्रवाहिनी (Ureter)
- (3) एक मूत्राशय (Bladder)
- (4) एक मूत्र मार्ग (Urethra)



मानव उत्सर्जन तंत्र

★ वृक्क में मूत्र, बनने के बाद मूत्रवाहिनी से होता हुआ मूत्राशय में एकत्रित होता है।

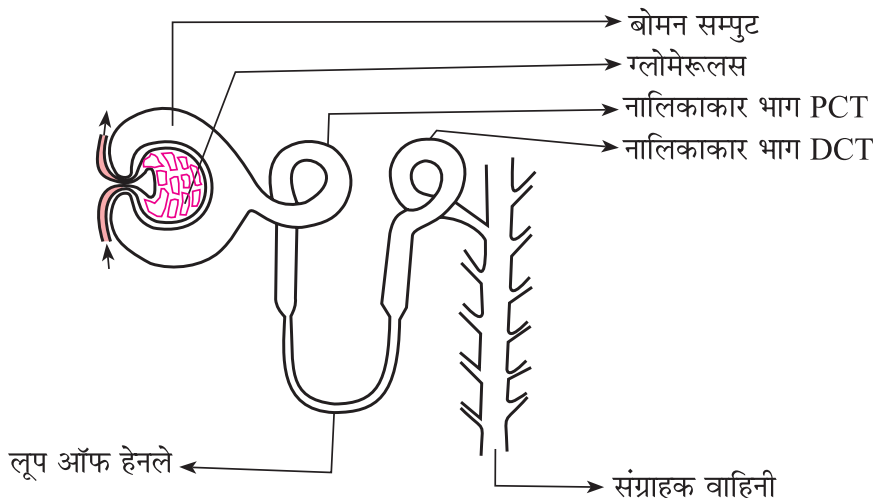
★ मूत्र बनने का उद्देश्य रुधिर में से वर्ज्य (हानिकारक अपशिष्ट) पदार्थों को छानकर बाहर करना है।

वृक्क में मूत्र निर्माण प्रक्रिया

वृक्क की संरचनात्मक व क्रियात्मक इकाई वृक्काणु (Nephron) कहलाती है। वृक्काणु के मुख्य भाग इस प्रकार हैं।

1. केशिका गुच्छ (ग्लोमेरुलस) : यह पतली भित्ति वाला रुधिर कोशिकाओं का गुच्छ होता है।
2. बोमन संपुट
3. नलिकाकार भाग
4. संग्राहक वाहिनी

वृक्क में उत्सर्जन की क्रियाविधि



वृक्काणु की रचना

1. **कोशिका गुच्छ निस्स्यंदन** : जब वृक्क-धमनी की शाखा वृक्काणु में प्रवेश करती है, तब जल, लवण, ग्लूकोज, अमीनों अम्ल व अन्य नाइट्रोजनी अपशिष्ट पदार्थ, कोशिका गुच्छ में से छनकर वोमन संपुट में आ जाते हैं।
2. **वर्णात्मक पुनः अवशोषण** : वृक्काणु के नलिकाकार भाग में, शरीर के लिए उपयोगी पदार्थों, जैसे ग्लूकोज, अमीनो अम्ल, लवण व जल का पुनः अवशोषण होता है।
3. **नलिका स्रावण** : यूरिया, अतिरिक्त जल व लवण जैसे उत्सर्जी पदार्थ वृक्काणु के नलिकाकार भाग के अंतिम सिरे में रह जाते हैं व मूत्र का निर्माण करते हैं। वहां से मूत्र संग्राहक वाहिनी व मूत्रवाहिनी से होता हुआ मूत्राशय में अस्थायी रूप से संग्रहित रहता है तथा मूत्राशय के दाब द्वारा मूत्रमार्ग से बाहर निकलता है।

कृत्रिम वृक्क (Artificial Kidney)

कृत्रिम वृक्क (अपोहन) : यह एक ऐसी युक्ति है जिसके द्वारा रोगियों के रुधिर में से कृत्रिम वृक्क की मदद से नाइट्रोजन युक्त अपशिष्ट पदार्थों का निष्कासन किया जाता है।

प्रायः एक स्वस्थ व्यस्क में प्रतिदिन 180 लीटर आरंभिक निस्स्यंदन वृक्क में होता है। जिसमें से उत्सर्जित मूत्र का आयतन 2 लीटर है। शेष निस्स्यंदन वृक्कनलिकाओं में पुनः अवशोषित हो जाता है।

पादप में उत्सर्जन

- ★ वाष्पोत्सर्जन प्रक्रिया द्वारा पादप अतिरिक्त जल से छुटकारा पाते हैं।
- ★ बहुत से पादप अपशिष्ट पदार्थ कोशिकीय रिक्तिका में संचित रहते हैं।
- ★ अन्य अपशिष्ट पदार्थ (उत्पाद) रेजिन तथा गोंद के रूप में पुराने जाइलम में संचित रहते हैं।
- ★ पादप कुछ अपशिष्ट पदार्थों को अपने आसपास मृदा में उत्सर्जित करते हैं।

प्रश्नावली

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (1 Mark)

1. स्वपोषी और विषमपोषी पोषण में अंतर स्पष्ट करो।
2. जाइलम को यदि पौधों से हटा दिया जाए तो क्या होगा ?
3. भोजन के पाचन में लार की क्या भूमिका है ?
4. पौधों में खनिज पदार्थों और पानी के परिवहन के लिए विशेष ऊतक का नाम लिखो।
5. इमल्सीकरण क्या है ?